P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

''मालवा की प्रमुख नदियों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक भूगोल'' परमार अभिलेखों के विशेष संदर्भ में

रागिनी राय
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में पूर्वमध्यकालीन मालवा के परमार वंश से सम्बन्धित अभिलेखों में उल्लिखित नदियों का अभिधान एवं उनके सांस्कृतिक महत्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इसके लिए प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों की सहायता ली गई है। अभिलेखों में नर्मदा, रेवा, माही, वेत्रवती, कुविलारा, गर्दभ आदि नदियों के उल्लेख प्राप्त होते हैं। उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश की नदियों में एक मात्र 'रेवा' का उल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। उत्तर वैदिक साहित्य में इसका तादात्म्य नर्मदा से किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में कुछ ऐसी नदियों के बारे में भी चर्चा की गई है जो अभिलेखों में अप्राप्य हैं परन्तु मालवा क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं जैसे– सिंधु, चम्बल, दशार्ण, शिप्रा आदि। शिप्रा प्राचीनकाल से आज तक सांस्कृतिक महत्व की नदी बनी हुई है जिसके किनारे उज्जैन सिंहस्थ कुम्भ हिन्दू धार्मिक मेला प्रत्येक 12 वर्ष पर उज्जैन शहर में लगता है।

मुख्य शब्द : नदियाँ, अभिलेख, ताम्रपत्र, मालवा, परमार, साहित्यक ग्रंथ, कालिदास ग्रंथावली।

प्रस्तावना

ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण आधुनिक मध्य प्रदेश की सीमा के अंतर्गत आने वाले मालवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह प्रदेश उत्तरी अक्षांश $21^0.70–25^0.10$ तथा पूर्वी देशान्तर $73^0.45–79^0.14$ के मध्य स्थित है। अनेक नदियों से अभिसिंचित इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक युग से लेकर ऐतिहासिक युग तक की संस्कृतियों का परिज्ञान सम्भव है। पूर्वमध्यकालीन मालवा के परमार वंश से सम्बन्धित अनेकानेक अभिलेख प्राप्त हुए हैं। ये अभिलेख मुख्यतः एच0वी0 त्रिवेदी द्वारा सम्पादित 'कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम्' अंक VII, भाग II में प्रकाशित हैं इसके अलावा एपिग्रैफिया इण्डिका एवं जर्नलों में भी प्रकाशित हैं। इन अभिलेखों में प्राप्त नदियों के नामों का अभिधान साहित्यिक ग्रंथों की सहायता से की गई है। अभिलेखों एवं साहित्यिक ग्रंथों में प्राप्त मालवा की प्रमुख नदियों की भौगोलिक स्थिति तथा सांस्कृतिक महत्व को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

साहित्यावलोकन

मालवा क्षेत्र पर पी0के0 भट्टाचार्य एवं मालती महाजन ने कार्य किया है। भट्टाचार्या की पुस्तक 'हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश' केवल प्रारम्भिक आँकड़ों पर आधारित है साथ ही मालती महाजन की पुस्तक 'मध्य प्रदेश : कल्चरल एण्ड हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी फ्राम प्लेसनेम्स इन इंस्क्रिप्शन्स' मूलतः अभिलेखों पर आधारित हैं। इस प्रकार मालवा के नदियों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक भूगोल पर कोई सर्वांगीण गम्भीर कार्य नहीं हुआ है। हमारा कार्य एच0वी0 त्रिवेदी द्वारा सम्पादित 'कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम्' एवं ए0सी0 मित्तल द्वारा सम्पादित इंस्क्रिप्शन्स ऑव द इम्पीरियल परमाराज एवं एपिग्रैफिया इण्डिया में प्रकाशित कुछ अभिलेखों में उल्लिखित नदियों के अभिधान पर आधारित है जिसके लिए प्राचीन भारतीय साहित्यिक ग्रंथों से भी सहायता ली गई है।

अध्ययन का उद्देश्य

मानस सभ्यता का उद्गम नदी घाटियों से आरम्भ हुआ है। प्राचीनकाल से ही नदियाँ हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रही हैं। शोध पत्र में मालवा की प्रमुख नदियों विशेषकर जिनका उल्लेख पूर्वमध्यकालीन अभिलेखों में प्राप्त होता है उनका भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अभिधान प्रस्तुत

करना है। सभी तीर्थों का महत्व नदियों के अस्तित्व पर ही आधारित रहा है। इनकी अवस्थिति, प्राचीनता, पवित्रता और सांस्कृतिक महत्व को उद्घाटित करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

नदियाँ

मालवा क्षेत्र में दो अपवाह तन्त्र हैं। अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ जैसे– नर्मदा, ताप्ती और माही हैं। बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ जैसे– चम्बल, बेतवा जो कि यमुना में जाकर मिल जाती हैं।[1] नर्मदा जो मध्य तथा पश्चिम भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी है, मैकल पर्वतमाला से निकलती है और मध्य भारत तथा भोपाल की प्राकृतिक सीमा बनाती हुई दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती है। यह नदी इन्दौर से बहती हुई बम्बई के रेवाकण्ठ से गुजरती है और भड़ौंच में अरब सागर में मिलती है। चूँकि यह नदी विन्ध्य और सतपुड़ा की दो पर्वतमालाओं के बीच से प्रवाहित होती है इसलिए यह कई छोटी सहायक नदियों द्वारा आपूरित है। नर्मदा (टालेमी की नेमेडोस Namados) रेवा, समोद्भवा और मेकलसुता जैसे अन्य नामों से भी प्रसिद्ध हैं।[2] रेवा का स्रोत विन्ध्य पर्वतमाला से मिली हुई अमरकण्टक पहाड़ियों से हैं। मण्डला के थोड़ा पहले नर्मदा और रेवा का संगम होता है, जहाँ से वे दोनों ही नामों से आगे बढ़ती है।[3] अधीतकालीन अनेक परमार अभिलेखों में 'नर्मदा' तथा 'रेवा' नदी के नामोल्लेख प्राप्त होते हैं। नर्मदा का नामोल्लेख वाक्पतिदेवराज द्वितीय के धरमपुरी ताम्रपत्र अभिलेख[4] और अर्जुनवर्मन के सीहोर तामपत्र अभिलेख[5] में प्राप्त होता है। 'रेवा' का नामोल्लेख जिन अभिलेखों में प्राप्त होता है उनके नाम इस प्रकार हैं – अर्जुनवर्मन का सीहोर ताम्रपत्र अभिलेख[6], नरवर्मन कालीन देवास ताम्रपत्र अभिलेख[7], नरवर्मनकालीन भोजपुर का जिन प्रतिमा अभिलेख[8], महाकुमार उदयवर्मन का भोपाल ताम्रपत्र अभिलेख[9], देवपालकालीन मान्धाता ताम्रपत्र अभिलेख[10], जयवर्मन द्वितीय कालीन मान्धाता ताम्रपत्र अभिलेख[11], जयवर्मनकालीन मान्धाता ताम्रपत्र अभिलेख[12]। मध्य प्रदेश की नदियों में एकमात्र रेवा का ही उल्लेख। वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है।[13] उत्तर वैदिक साहित्य में इसका तादात्म्य नर्मदा से किया गया है।[14] प्राचीन लेखक कभी–कभी नर्मदा का तादात्म्य ऋक्ष पर्वत से तथा रेवा का विन्ध्य पर्वत से करते हैं (जैसे–महाभारत, रघुवंश)[15]। अनेक पुराण जैसे कूर्म, मत्स्य, ब्रह्माण्ड, वामन और वायु ऋक्ष पर्वत को नर्मदा का स्रोत मानते हैं।[16] साधारणतः पौराणिक लेखों में विन्ध्य श्रृंखला को तीन भागों में बांटा गया है–ऋक्ष, विन्ध्य और पारियात्र।[17] कालिदास के मेघदूत में भी इसका वर्णन है।[18]

ताप्ती

महादेव पहाड़ियों के पश्चिम में मुल्ताई पठार ताप्ती या तापी नदी का स्रोत है। यह नदी मध्यभारत तथा बरार के पश्चिमोत्तर छोर की प्राकृतिक सीमा के रूप में पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। यह नदी बुरहानपुर से होकर गुजरती हुई तथा महाराष्ट्र में प्रवेश करने और सूरत में समुद्र (खम्भात की खाड़ी) में गिरने के पहले मध्य प्रदेश की सीमा पार करती है।[19] मुल्ताई सतपुड़ा पठार पर स्थित है। इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया[20] के अनुसार नदी का वास्तविक स्रोत यहाँ से दो मील दूर ($21^0$48'N और $78^0$15'E) है। मध्य प्रदेश में ही महादेव पहाड़ियों से निकलने वाली चार सहायक नदियाँ इसमें मिलती हैं। पूर्वी खानदेश में इसमें 'पूर्णा' नामक एक महत्वपूर्ण नदी मिलती है। 'पूर्णा' विन्ध्यपर्वतमाला की सतपुड़ा शाखा से निकलती है और बुहरहानपुर के थोड़ा आगे ताप्ती में मिलती है।[21] ताप्ती का जल अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है। इसका नाम 'तापी' 'ताप' से लिया गया है, क्षेत्रीय ब्राह्मणों के अनुसार, सूर्य ने इसकी सृष्टि अपने ताप से अपनी रक्षा के लिए की।[22]

माही

परमार शासक सीयक द्वितीय के हरसोल ताम्रपत्र अभिलेख[23] में 'माही नदी' का नामोल्लेख है। माही नदी पश्चिम भारत की एक प्रमुख नदी है। माही का उद्गम मध्य प्रदेश के झबुआ जिला के समीप विन्ध्य पर्वत श्रेणी से हुआ है। यह दक्षिणी अरावली में जयसमंद झील से प्रारम्भ होती है। यह मध्य प्रदेश के धार, झबुआ और रतलाम जिलों तथा गुजरात राज्य से होती है खम्भात की खाड़ी द्वारा अरब सागर में गिरती है। इसकी लम्बाई 579 किमी0 (360 मील) है।[24] पेरिप्लस ने मैस (Mais) तथा टॉलमी ने मोफिस (Mophis) कहा है।[25] इस नदी के उद्भव के बारे में अनेक दन्त कथायें प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार, माही पृथ्वी और उज्जैन के राजा इन्द्रद्युम्न के पसीने से उत्पन्न पुत्री है।[26] वायु पुराण में 'महती' कहा गया है।[27]

वेत्रवती या बेतवा

अधीतकालीन अभिलेखों में प्रचुर मात्रा में 'वेत्रवती' का नामोल्लेख प्राप्त होता है। परमार शासक त्रैलोक्यवर्मन के प्रस्तरखण्ड अभिलेख[28] एवं महाकुमार हरिश्चन्द्रदेव कालीन भोपाल ताम्रपत्र अभिलेख[29] में 'वेत्रवती' का नाम उत्कीर्ण है। इस नदी की पहचान आधुनिक बेतवा नदी से की जाती है जो भोपाल के कुमारी ग्राम के पास से निकलकर उत्तर–पूर्व दिशा की ओर प्राचीन विदिशा नगर से प्रवाहित होती हुई हमीरपुर (उ0प्र0) में यमुना से मिल जाती है।[30] इसका वर्णन मत्स्य एवं वामनपुराण में वेणुमती के नाम से प्राप्त होता है।[31]

कालिदास मेघदूतम् में उल्लेख करते हैं कि दशार्ण की जो राजधानी है वह 'विदिशा' नाम से देश–देशांतरों में प्रसिद्ध है और इसी श्लोक में वेत्रवती (बेतवा) नदी का भी नामोल्लेख है।[32] इस प्रकार वेत्रवती आधुनिक बेतवा है जो प्राचीन दशार्ण राज्य (जिसकी राजधानी विदिशा थी) से होकर प्रवाहित होती थी।

सिन्धु

मालवा में प्रवाहित होने वाली सिन्धु एक छोटी नदी है किन्तु नरवर के समीप विस्तृत भूभाग में प्रवाहित होकर वह एक महान नदी के रूप में परिवर्तित हो जाती है।[33] साधारणतया सिन्धु का समीकरण चम्बल की सहायक नदी काली सिन्धु से किया जाता है। 'मेघदूत' में इसे सिन्धु कहा गया है।[34] 'विष्णुपुराण' में

दशार्ण नदी के साथ उल्लिखित सिन्धु की पहचान सिन्धु के साथ की जाती है।[35] पी0के0 भट्टाचार्य के अनुसार, कालीसिन्धु के अतिरिक्त मालवा में एक दूसरी सिन्धु नदी है जो विदिशा जिले के सिरोंज तहसील के नैनवास ग्राम के समीप समुद्र तल की 1780 फुट की ऊँचाई पर स्थित एक कुण्ड से निकलकर उत्तर–पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई यमुना नदी में मिल जाती है।[36] डे के अनुसार महाभारत में उल्लिखित संध्या नदी ही सिंधु है।[37] 'मालविकाग्निमित्रम्' में पुष्यमित्र का पौत्र वसुमित्र (जो कि पुष्यमित्र का सेनापति था) का सिन्धु नदी के दक्षिण में एक यवन राजा से संघर्ष हुआ।[38] यह सिंधु सम्भवतः मध्य प्रदेश की नदी काली सिंध थी।

चम्बल

चम्बल या चर्मण्वती आधुनिक चम्बल है जो यमुना की एक मुख्य सहायक नदी है। यह इन्दौर के पश्चिमोत्तर में अरावली पर्वतमाला से निकलती है। पूर्वी राजस्थान से पूर्वोत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई यमुना में मिल जाती है।[39] पाणिनि[40] ने चर्मण्वती नदी का उल्लेख किया है परन्तु उसकी स्थिति निश्चित नहीं है। अग्रवाल ने इसकी पहचान चम्बल नदी से किया है।[41] ब्रह्माण्ड पुराण में भी विदिशा तथा वेत्रवती नदियों के नाम का उल्लेख वर्णाशा, नन्दना, सदानीरा, महानदी, पाशा तथा चर्मण्वती के साथ हुआ है।[42] कालिदास मेघदूत में कहते हैं कि, मेघ रामगिरि से विदिशा, उज्जयिनी एवं देवगिरि होता हुआ 'चर्मण्वती' को पार कर दशपुर में पहुँचा।[43] प्राचीन जनश्रुति के अनुसार यह नदी उन गायों के चर्म से टपके रक्त से अस्तित्व में आयी थी, जिनका राजा रन्तिदेव के यज्ञ में गवालम्भन या बलिदान किया गया था।[44]

धसान या दशार्ण

पुराणों में उल्लिखित दशार्ण की पहचान आधुनिक धसान नदी से की जाती है जो भोपाल से प्रवाहित होती हुई वेतश (वेत्रवती) में गिरती है।[45] धसान का उद्गम सागर का पठार है, जो उत्तर–पूर्व दिशा में झाँसी एवं सागर जिलों के मध्य से बहती है।[46] कूर्म, मत्स्य, ब्रह्माण्ड, वामन और वायुपुराणों ने धसान का स्रोत ऋक्षश्रृंखला को माना है।[47] मार्कण्डेय–पुराण में दशार्ण देश के नाम की उत्पत्ति का कारण इस नाम की नदी (दशार्ण) को बताया है जो इसके बीच होकर प्रवाहित होती थी।[48]

शिप्रा

इसे 'क्षिप्रा' भी कहा जाता था।[49] यह एक पवित्र नदी के रूप में प्रसिद्ध थी। शिप्रा नदी इन्दौर के दक्षिण पूर्व 12 मील की दूरी पर स्थित 'उजैनी' ग्राम के समीप स्थित ककरी बर्डी पहाड़ी से निकलकर मालवा में प्रवाहित होती हुई कालूखेड़ी ग्राम के समीप चम्बल नदी में मिल जाती है।[50] पौराणिक सूची के अनुसार यह पारियात्र पर्वत से निकलती है।[51] स्कन्दपुराण के 'आवन्त्यखण्ड' से विदित होता है कि अवन्ती में शिप्रा को उत्तरवाहिनी कहा जाता था जिसका अर्थ 'उत्तर की ओर प्रवाहित होने वाला' था।[52] कालिदास ने इसे एक ऐतिहासिक नदी के रूप में अमर बना दिया है। 'मेघदूत' में वर्णन है कि ''उज्जयिनी नगर शिप्रा नदी के प्रातःकालीन कमलों की सुगंधित के भार से युक्त वायु के कारण सुवासित हो उठता था।''[53] प्राचीन समृद्धिशाली विशाला (उज्जयिनी) नगरी शिप्रा के दाहिने तट पर बसी हुई थी। शिप्रा की दो सहायक नदियाँ हैं–खान और गम्भीरा।[54] कालिदास ने मेघदूत में शिप्रा की एक अन्य सहायक नदी गंधवती का उल्लेख किया है जिसके तट पर उज्जैन का प्रसिद्ध 'महाकाल' मंदिर बना था।[55] एक अनुश्रुति के अनुसार शिप्रा नदी विष्णु के रक्त से उद्भूत हुई है।[56]

कुविलारा या कपिला

'कुविलारा' नदी का उल्लेख इन्दौर जिले में स्थित देवास से प्राप्त परमार शासक नरवर्मनकालीन ताम्रपत्र अभिलेख[57] में प्राप्त होता है। 'कपिला' नदी का उल्लेख हरसौद से प्राप्त देवपालकालीन अभिलेख[58] और मान्धाता से प्राप्त जयवर्मन द्वितीय कालीन ताम्रपत्र अभिलेख[59] में प्राप्त होता है। कपिला की पहचान एक छोटी नदी आधुनिक **कोलार** से की जाती है जो अमरेश्वर के निकट नर्मदा में मिल जाती है।[60] अमरेश्वर प्रसिद्ध ओंकार–मान्धाता है जो मध्य–प्रदेश के पूर्वी निमाड़ जिले में स्थित है। यही **कोलार** नदी कुविलारा[61] है जो उपर्युक्त देवास ताम्रपत्र अभिलेख में उल्लिखित है।

गर्दभ नदी

इसी नदी का उल्लेख परमार शाक वाक्पतिराजदेव के धरमपुरी ताम्रपत्र अभिलेख[62] में प्राप्त होता है। इसकी पहचान अभी तक सुनिश्चित नहीं हो पायी है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन भारत में जो नदियाँ अस्तित्व में थीं कुछेक को छोड़कर आज भी प्रवाहमान हैं। नदियाँ केवल एक भौगोलिक अस्तित्व ही नहीं बल्कि जीवन प्रदायिनी है। नदियाँ भारतीय सभ्यता का मूल हैं। इन घाटियों के सहारे ही हमारी प्राचीन सभ्यताएँ विकसित हुईं और इन्होंने हमारा सदैव पालन–पोषण किया है। नर्मदा और गंगा देश की दो बड़ी नदियाँ भी खतरे मे हैं। शिप्रा प्राचीनकाल से आज तक सांस्कृतिक महत्व की नदी बनई हुई है जिसके किनारे उज्जैन सिंहस्थ कुम्भ हिन्दू धार्मिक मेला प्रत्येक 12 वर्ष पर उज्जैन शहर में लगता है। पिछले कुछ सालों में हमारी नदियों के जल स्तर में तेजी से गिरावट आयी है। उज्जैन में 2016 के सिंहस्थ कुम्भ मेले के लिए नर्मदा नदी से पानी को पम्प करके एक कृत्रिम नदी बनानी पड़ी क्योंकि शिप्रा नदी में पानी नहीं था। अतः नदियों की निर्मलता एवं प्रवाहमान निरन्तरता को लौटाने के लिए केवल सरकारी प्रयास नहीं बल्कि मानव मन की गहरी अंतस्चेतना को जागृत करना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिंह, आर0एल0, इण्डिया : एक रीजनल ज्यॉग्रफी, वाराणसी, 1971, पृ0 570.*

2. लॉ, बी0सी0, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल (अनु0–रामकृष्ण द्विवेदी) उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1972, पृ0 60.
3. पूर्वोद्धृत.
4. कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम्. सं0 एच0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), नई दिल्ली, 1978, पृ0 10–14, पंक्ति 8–9.
5. पूर्वोद्धृत, पृ0 170, टेक्स्ट–गद्यभाग, प्रथम पंक्ति.
6. पूर्वोद्धृत, पृ0 170, टेक्स्ट–गद्यभाग, चतुर्थ पंक्ति.
7. कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम् सं0 ए0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), नई दिल्ली, 1978, पृ0 102–105, प्लेट XXXIV, पंक्ति 10.
8. पूर्वोद्धृत, पृ0 106–114, प्लेट XXXV, पंक्ति 28 एवं 29.
9. पूर्वोद्धृत, पृ0 157–161, प्लेट XLVI(i), पंक्ति 13.
10. कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम् (सं0) एच0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), नई दिल्ली, 1978, पृ0 182–183, प्लेट XLI(i).
11. पूर्वोद्धृत, पृ0 200–206 प्लेट LVI, पंक्ति 29.
12. पूर्वोद्धृत, प्लेट LX(i), पंक्ति 9, 13.
13. भट्टाचार्य, पी0के0, हिस्टोरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश : फ्राम अर्ली रेकार्ड्स, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1977, पृ0 83.
– शतपथ ब्राह्मण, इण्डियन एण्टीक्वेरी, अंक XXX, पृ0 273.
14. सरकार, डी0सी0, कॉस्मोग्राफी एण्ड ज्यॉग्रफी इन अर्ली इण्डियन लिटरेचर, कलकत्ता, 1967, पृ0 17.
15. भट्टाचार्य, पूर्वोद्धृत, पृ0 84.
16. भट्टाचार्य, पूर्वोद्धृत, पृ0 84.
17. पूर्वोद्धृत.
18. कालिदास ग्रंथावली, (स0) मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, रेवा प्रसाद द्विवेदी, कालिदास – संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008 प्रथम भाग, पूर्वमेघ श्लोक–19, पृ0 433.
19. लॉ, बी0सी0, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल (अनु0 रामकृष्ण द्विवेदी), उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1972, पृ0 60–61.
20. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, अंक XXIII, पृ0 246–48.
21. लॉ, बी0सी0, पूर्वोद्धृत, पृ0 61.
22. भट्टाचार्य, पी0के0, हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1977, पृ0 107.
23. कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम् (सं0) एच0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), आक्यॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1978, प्लेट II, ग्रांट B(ii), पंक्ति 15.
24. मुक्तज्ञानकोश वीकीपीडिया से ...
25. भट्टाचार्य पी0के0, हिस्टोरिकल ज्यॉग्रफी ऑद द मध्य प्रदेश, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1977, पृ0 87.
26. पूर्वोद्धृत.
27. सरकार, डी0सी0, स्टडीज इन द ज्यॉग्रफी ऑफ एंशियेंट एण्ड मेडिवल इण्डिया, दिल्ली, 1960, द्वितीय संस्करण, 1971, पृ0 45.
28. कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम् (सं0) एच0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), ए0एस0आई0, नई दिल्ली, 1978, पृ0 141–144, प्लेट XLIII, पंक्ति 8, टेक्स्ट पंक्ति 4.
29. पूर्वोद्धृत, पृ0 146–152, प्लेट XLV(i), पंक्ति 10.
30. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, भाग 8, पृ0 17.
31. सरकार, डी0सी0, स्टडीज इन ज्यॉग्रफी ऑफ ऐंश्येंट एण्ड मेडिवल इण्डिया, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1971, पृ0 46.
32. कालिदास ग्रंथावली, (स0) मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी 2008, प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत, श्लोक–19, पृ0 433.
33. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, भाग 22, पृ0 432.
34. कालिदास ग्रंथावली, (सं0) रामप्रताप त्रिपाठी, किताब महल, इलाहाबाद, पूर्व– मेघ 19.
35. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, भाग 22, पृ0 432.
36. भट्टाचार्य, पी0के0, हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1977, पृ0 85.
37. डे, एन0एल0, द ज्यॉग्रफिकल डिक्शन्री ऑफ एंशिऐंट एण्ड मेडिवल इण्डिया, लंदन 1927, पृ0 176.
38. मजूमदार, द एज ऑफ इम्पीरियल यूनिटी, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, 2001, अंक 2, पृ0 96–97.
39. लॉः बी0सी0 प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल (अनु0 रामकृष्ण द्विवेदी), उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1972, पृ0 521.
40. अष्टाध्यायी ऑफ पाणिनि, (सं0) एस0सी0 वासु, इलाहाबाद, 1891, VIII, 2, 12.
41. अग्रवाल, वी0एस0, इण्डिया ऐज नोन टु पाणिनि, इलाहाबादः 1953, पृ0 47.
42. ब्रह्माण्डपुराण, श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1906 IV, 2, 16, 28.
वर्णाशानन्दना चैव सदानीरा महानदी।
पशा चर्मण्वतीनूपा विदिशा वेत्रक्त्यपि।।
43. कालिदास ग्रंथावली, (सं0) डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008, प्रथम भाग, पूर्वमेघ, श्लोक 45, पृ0 441.
44. भट्टाचार्य, पी0के0, हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश, फ्राम अर्ली रेकार्ड्स, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1977, पृ0 88.
45. लॉ, वी0सी0, रीवर्स ऑफ इण्डिया, कलकत्ता ज्यॉग्रफिकल सोसायटी, पब्लिकेशन नं0 6, 1944, पृ0 40.
46. सिंह, आर0एल0, इण्डिया : ए रीजनल ज्यॉग्रफी, नेशनल ज्यॉग्रफिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी 1971, पृ0 571.

47. *भट्टाचार्य, पी0के0, हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश फ्राम अर्ली रेकार्ड्स, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1977, पृ0 100.*
48. *शुक्ल, के0के0, प्राचीन मालवा का ऐतिहासिक एवं कलागत अध्ययन, कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी, 1998, पृ0 18.*
49. *सरकार, डी0सी0, स्टडीज इन द ज्यॉग्रफी ऑफ एंशियेंट एण्ड मेडिवल इण्डिया, 1960, पृ0 46.*
50. *इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, अंक XVIII, पृ0 14–15.*
51. *लॉ, बी0सी0, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, (अनु0) रामकृष्ण द्विवेदी, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1972, पृ0 549.*
52. *पूर्वोद्धृत.*
53. *कालिदास ग्रंथावली, (सं0) डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं सेवा प्रसाद द्विवेदी कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जयिनी, 2008, प्रथम भाग, पूर्वमेघ 31, पृ0 436.*
54. *भट्टाचार्य, पी0के0, हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रफी ऑफ मध्य प्रदेश, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1977, पृ0 91.*
55. *पूर्वोद्धृत.*
56. *इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, अंक XVIII, पृ0 14–15.*
57. *कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम् (सं0) एच0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), ए0एस0आई0, नई दिल्ली, 1978, पृ0 102–105, प्लेट XXXIV, पंक्ति 10.*
58. *पूर्वोद्धृत, पृ0 170, टेक्स्ट–गद्यभाग, चतुर्थ पंक्ति.*
59. *पूर्वोद्धृत, पृ0 200–206, प्लेट LVI, पंक्ति 29.*
60. *पूर्वोद्धृत, पृ0 169.*
61. *पूर्वोद्धृत.*
62. *कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम् (सं0) एच0वी0 त्रिवेदी, अंक VII (II), ए0एस0आई0, नई दिल्ली, 1978, पृ0 10–14, प्लेट IV(i), पंक्ति 12.*